समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 18 पृष्ठः– 4 अंक :– **44** संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

ऋषि परम्परा के महामानव - पं. दीनदयाल उपाध्याय

डॉ. किशन कछवाहा

विकास के नाम पर अब परिदृश्य बदल रहा है। शहरीकरण को विकास और आधुनिकता से जोड़ दिया गया है। लेकिन इसके लिये स्वच्छ जल और स्वच्छ वायु भी जरूरी है, जो इसकी राह में एक बड़ी बाधा है। देश मे सौ नये शहर बसाने की योजनायें बनाई जा रही हैं। नये शहर बनेंगे जब कई हजार लाख टन की फसल उपजाने वाले खेतों को कॉक्रीट जंगल में तब्दील कर दिया जायेगा। फिर पानी के परम्परागत स्त्रोतों का बिनष्टीकरण भी तो होगा, साथ ही लोगो ने नैसर्गी का समूलनाश। सफाई की समस्या भी बढ़ेगी और कूड़े के ढ़ेर भी। पं. दीनदयाल जी का मानना था कि विकास और प्रगति के अंतर को समझा जाना चाहिये जिसकी नितांत उपेक्षा की जा रही हैं। प्रगति में व्यक्ति, समुदाय और प्रकृति के कल्याण के भाव निहित होते हैं।

प्राचीन काल से भारत कृषि प्रधान होने के कारण ग्राम प्रधान देश रहा है। इस कारण इसकी विशेषता उसकी संस्कृति तो रही ही है, साथ ही परिवार आधारित अर्थ व्यवस्था भी, जिसके अंतगर्त संपूर्ण भारत की उन्नति के लिये आधार भूत संरचना उपलब्ध कराना मूल उदेश्य रहा है। इसी व्यवस्था के कारण संपूर्ण विश्व में भारत को एक आकर्षण के रूप में देखा गया था। उस मूल स्वरूप को, उस अर्थ तंत्र वाले ढ़ॉचे को जिसमें भरतीयता निहित है, बचाये रखने की जरूरत है आज विश्व की अर्थ व्यवस्था असन्तुलित होती जा रही है। जबकि हजारों वर्षो की गुलामी झेल चुके भारत की अर्थव्यवस्था तरह–तरह के झंझावातों को झेलने के उपरान्त भी अपनी स्वदेशी पहचान को न छोड़ने के कारण सिर ताने सम्मान के साथ खड़ी है।

पं. दीनदयाल जी ऋषि परम्परा के मनीषी, दूरदर्शी राजनेता थे। तत्कालीन समस्याओं का समाधान ढूँढ़ना उनके चिन्तन का मुख्य विषय हुआ करता था।

इतिहास के प्राचीन भारतीय चिन्तन तथ्यों पर उनकी गहरी समझ थी – इस बात को उनके द्वारा लिखित उनकी अनुपम कृति '' सम्राट चन्द्रगुप्त, पढ़कर समझा जा सकता है। उनका साहित्य और पत्रकारिता का योगदान उनके द्वारा लिखी पुस्तकें तो हैं ही – राष्ट्रधर्म, स्वदेश, पांचजन्य साप्ताहिक पत्र थे जिसके माध्यम से आम जन भी उद्वेलित हुये। उनका स्पष्ट्र मानना था कि जब तक अधोमुखी बनी परिवार व्यवस्था उर्ध्वमुखी एवं राष्ट्रानुकूल नही बन जाती तब तक हमारी नाना प्रकार की समस्याओं का समाधान नही हो पायेगा। इसके उलट नयी – नयी समस्यायें हमारे सम्मुख खड़ी होती रहेगी। परिवार की यह सीमित परिकल्पना है जिसमें सिर्फ पति – पत्नि और उसकी सन्तान का समावेश किया जाता है। उसके साथ भाई – बहन, माता – पिता, मामी, चाचा, ताऊ, मामा, दादा – दादी, बहू – दामाद, ससुर आदि बीसियों रिश्ते भी तो है। क्या इन सबसे सम्बंधो का निर्वाह नही करना पडता ? इनके प्रति आत्मीय सहानुभूति इनके लिये कुछ त्याग करने की स्वेच्छा, एक दूसरे के सुख – दुख में सहयोग करना भी आवश्यकता होता है। वृद्धावस्था में तो नयी पीढ़ी पर निर्भर रहना मजबूरी हो जाती है। इस घटक को नष्ट होने से बचाया जाना जरूरी है। इसमें कमी आने के कारण ही परिवार टूट रहे है, इसे प्रत्येक को समझना है। पं. जी का मानना था कि परिवार का टूटना, राष्ट्र का टूटना है। इसके दुष्परिणामों को हमसब देख रहे है। संयुक्त परिवार प्राणाली लगभग समाप्त प्राय की स्थिति में आ चुकी हैं यही कारण है कि अनेकों सांस्कृतिक परम्परायें टिकी नहीं रह सकी है। भले ही हम शिक्षण, व्यवसाय, बढ़ता नगरीकरण, आवास की अपर्याप्तता, आय की विषमता आदि अन्यान्य कारणों को दोष दें। अपने देश के शहरों में जिस तरह का तनाव और दबाब लगातार अनुभव किया जा रहा है, उसके परिणाम स्वरूप भी माननीय सम्बंधों में बदलाव महसूस किया जा रहा है। उनका मानना था कि इसके कारण संस्कृति, मूल्य, मान्यतायें, विश्वास की अवधारणायें, जो किसी समाज की मूल्यवान धरोहर हुआ करती थी, वे परिवर्तित होकर सामाजिक संरचना को भी जटिल बना रही है। वह उस मकर–जाल में फंसकर रह गया है। वह चाहकर भी उस उलझन को सुलझा नही पा रहा हे। इस कारण आपसी और सामाजिक सम्बंधों को बहुत बार नजर अन्दाज कर देने को वाध्य हो जाता है। बाजार के हालातों ने भी परिवार, और समाज की दूरियों को बढ़ाया है। पं. दीनदयाल जी के सरल हदय को इस बात ने ज्यादा आहट किया था कि '' सैकड़ों वर्षो से भारत आधात पर आधात सहन करता आ रहा है, फिर भी उसकी सभ्यता को मूल प्रवाह जीवन्त बना हुआ है, देश भी बंट गया और हिन्दू भी धटता चला जा रहा है, तब भी क्या हिन्दू समाज लगातार हमलों का शिकार होता रहेगा। क्या उसे इस विभाजित देश में अपनी परम्पराओं और सांस्कृति – धार्मिक अस्थाओं के रक्षण का अधिकार नही मिलना चाहिये ? पंडित जी आज हमारे बीच नही है, लेकिन उन्होंने जो हमे दिशा – ज्ञान दिया है, उसकी ज्योति युग – युगों तक प्रकाश देती रहेगी–मार्गदर्शन करती रहेगी। पंडित जी का जीवन एक समर्पित जीवन था। शरीर का कण – कण और जीवन का क्षण – क्षण उन्होंने राष्ट्रदेव के चरणों में अर्पित कर दिया था। संपूर्ण देश उनका घर था, सारा समाज उनका परिवार।

असहयोग आंदोलन में
पं.पू.डॉ. हेडगेवार बंदी बनाए गए थे

1921 में डॉ. हेडगेवार पर राजद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में मुकदमा चलाया गया था। उस समय डॉ. साहब ने न्यायालय में जो उत्तर दिया था, वह हर देशभक्त के लिए स्मरणीय है। उनका वह ऐतिहासिक वक्तव्य था

''मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मातृभूमि के भक्तों को दमन की चक्की में पीसने वाली सरकार के ऊपर मेरे कथन का कोई भी परिणाम नहीं होने वाला है। फिर भी मै इस बात को दुहराना चाहता हूं कि हिन्दूस्थान भारतवासियों के लिए ही है और पूर्ण स्वराज्य हमारा ध्येय है। आज तक ब्रिटिश प्रधानों एवं शासकों द्वारा उद्घोषित आत्म निर्णय' का नारा यदि कोरा ढोंग मात्र है तो सरकार खुशी से मेरे भाषण को राजद्रोहात्मक समझे, पर ईश्वर के न्याय पर से मेरा विश्वास कभी भी हिल नही सकेगा।' इन शब्दों में 8 जुलाई सन् 1921 में अंग्रेज न्यायाधीश श्री स्मेली के कोर्ट में पूजनीय डाक्टर हेडगेवार ने अपने ऊपर लगाए गए राजद्रोह के आरोप का उत्तर दिया था। उनके प्रभावी भाषण से समूचे कोर्ट के वातावरण में सनसनी फैल गई तथा न्यायाधीश महोदय ने अपनी कार्रवाई को 5 अगस्त तक स्थगित कर देने में ही भलाई समझी। यह घटना उन दिनों की है कि जब कांग्रेस के आदेशानुसार असहयोग आंदोलन के लिए देश में भूमिका तैयार की जा रही थी। पूजनीय डॉक्टर जी उन दिनों मध्य कांग्रेस के प्रमुख नेता थे। अतः महात्मा जी के असहयोग आंदोलन की मूल भूमिका से असहमत रहते हुए भी संगठन के एक सिपाही के नाते उन्होंने आंदोलन का प्रचार प्रारम्भ कर दिया । गांव – गांव में अपने उग्र देशभक्तिपूर्ण वक्तव्यों से उन्होंने नव चैतन्य निर्माण किया। ब्रिटिश सरकार भला इस देशभक्त की इन कार्यवाहियों को कैसे सह सकती थी ? अतः राजद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में जब मुकदमा चलाया गया तो अपने पक्ष की सफाई पेश करते हुए डॉक्टर जी ने उक्त घोषणा की थी।

5 अगस्त को जब पुनः उनका मुकदमा पेश हुआ तो उन्होंने स्वयं के ऊपर लगाए गए आरोप की धज्जियां उड़ाते हुए एक लिखित वक्तव्य दिया।

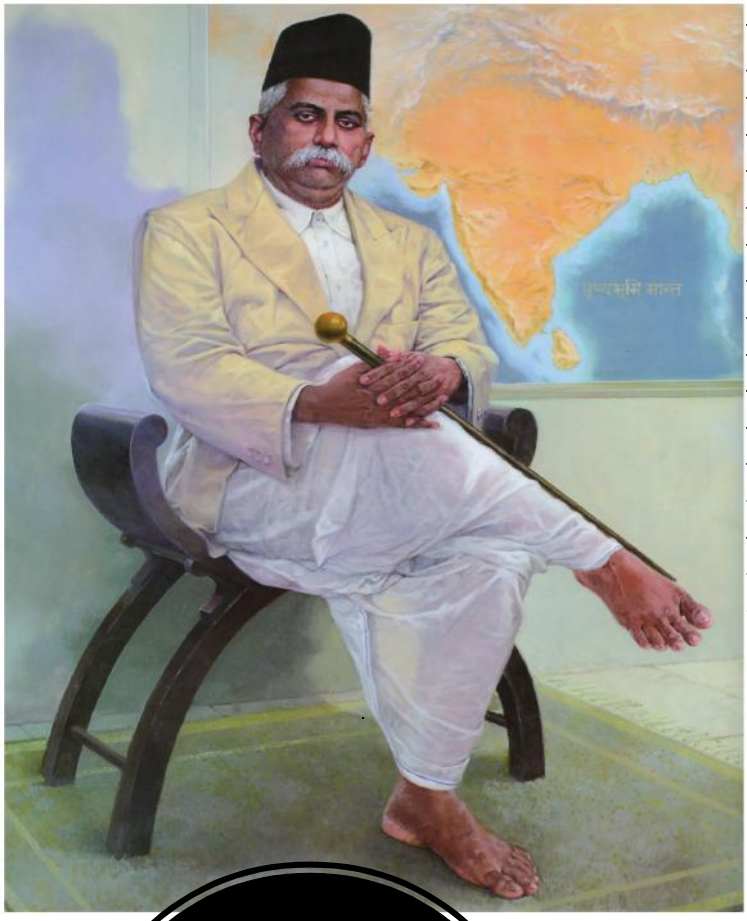

सचमुच विश्व के अंदर ऐसा भी कोई कानून है क्या, जो किसी एक देश के लोगों को दूसरे देश पर शासनकरने का अधिकार देता हो ?

उक्त ऐतिहासिक वक्तव्य में उन्होंने कहा

❖ मुझे यह कहा गया है कि मै अपने ऊपर लगाए गए इस आरोप का स्पष्टीकरण दूं कि मेरे भाषण, नीति–नियमानुसार प्रस्थापित ब्रिटिश राज्य शासन के विरूद्ध असंतोष, द्वेष भाव पैदा करने वाले होते हैं। हिन्दुस्थान के अन्दर किसी भारतवासी के कार्य की न्याय परीक्षा करने का कार्य कोई विदेशी राजसत्ता करे, इसे मैं अपना और अपने महान देश का अपमान समझता हूं।

❖ हिन्दूस्थान के अन्दर न्यायाधिष्ठित राजसत्ता विद्यमान है, ऐसा मुझे अनुभव नहीं होता और अब कोई इस प्रकार की बात मुझसे करता है तो मुझे आश्चर्य होता है। हमारे देश में इस समय शासन–सत्ता के नाम पर अगर कुछ है तो वह है पाश्विक शक्ति के बल पर लादी गयी गुण्डागर्दी मात्र ही। कानून उसके लिए केवल मजाक की वस्तु है और न्यायासन है उसका खिलौना। इस पृथ्वी तल पर यदि कही किसी राजसत्ता को, जो जनता के लिए ,जनता के द्वारा प्रस्थापित जनता की राजसत्ता हो। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की दिखाई देने वाली राज–पद्धति का अर्थ है – देश को व्यवस्थित रूप से लूटने के लिए धूर्त लोगों द्वारा आयोजित षड्यंत्र।

❖ अपने देश – बंधुओं के मन में अपनी दीन मातृभूमि के प्रति उत्कट मातृभूमि का भाव प्रदीप्त करने तथा भारत भारतीयों का ही है, यह तत्व उनके अंत : करण में अंकित करने का मैंने प्रयास किया है। यदि किसी भारतीय के लिए राजद्रोही हुए बिना राष्ट्रभक्ति के इन तत्वों का प्रतिपादन करना संभव न हो तथा भारतीय एवं यूरोपीय लोगों में शत्रु भाव उत्पन्न किए बगैर सत्य बोलना भी उसके लिए असंभव हो गया हो, यदि स्थिति इस सीमा तक पहुंच गई हो तो यूरोपीय लोग अथवा स्वयं को भारत का शासक कहने वाले अंग्रेजो को यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि सम्मानपूर्वक अपना बिस्तर समेटने की धड़ी नजदीक आ गई है।

❖ मै देख रहा हूं कि मेरे भाषणों का पूरा और सही वृत्त नहीं लिखा गया है। मेरा जो भाषण यहां प्रस्तुत किया गया है, वह काफी

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

राष्ट्रवाद के पुरोधा - हिन्दी के योद्धा सेनानी महर्षि दयानन्द सरस्वती

19 वी सदी में भारतवर्ष में नवजागरण का आरम्भ ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहनराय से आरम्भ होता है राजा राममोहनराय उच्चकोटि के महान पुरूष और अनेक भाषाओं के जानकार थे। स्वामी दयानन्द उनसे लगभग 50 वर्ष पीछे आते है। इस शताब्दी में भारतवर्ष के इतिहास में बड़े – बड़े महापुरूषों का जन्म हुआ था। राजा राममोहन राय, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, श्री केशवचन्द्र सेन, ज्योतिबा फुले, न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे, दादाभाई नौरोजी आदि नेता और सुधारकों ने अपनी आभा से भारतवर्ष को अलंकृत किया था। इन्हीं सब महापुरूषों में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का प्रादुर्भाव हुआ था। स्वामी जी का व्यक्तित्व नेतृत्व और अपनी महिमा से अपना स्थान सबसे अलग रखता है। अरविन्दघोष ने स्वामी जी को वेदार्थ का श्रेष्ठ उद्धारक और वेदों का वास्तविक भाष्यकार बताया था राजाराम मोहनराय, केशवचन्द्र सेन, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, महादेव गोविन्द्र रानाडे, दादाभाई नौरोजी सभी महापुरूषों अंग्रेंजी विद्या के विशारद थे। किन्तु स्वामी दयानन्द अंग्रेजी भाषा साहित्य से सर्वथा अनभिज्ञ थे। भारतवर्ष में सर्वप्रथम स्वराज्य का नारा स्वामी दयानन्द ने बुलन्द किया था। 1875 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात जब महारानी विक्टोरिया ने भारतवर्ष का शासन ब्रिटानिया सरकार के हाथों में ले लिया और यह घोषणा की कि अंग्रेज सरकार भारत की प्रजा के साथ पक्षपात रहित न्याय करेगी तब स्वामी दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में बड़ा मुँहतोड़ उत्तर दिया था।

विदेशी राज्य चाहे जितना अच्छा हो, निष्पक्ष, न्यायप्रिय, सन्तानवत् प्रजाओं का पालन करने वाला हो, वह स्वदेशी शासन से अच्छा कभी नही हो सकता।''

राष्ट्रवाद का त्रिसूत्री कार्यक्रम :– स्वामी दयानन्द के अनुसार राष्ट्रवाद के तीन घटक हैं 1. एक भाषा 2. उचित अनुचित का एक विचार 3. एक धार्मिक चारित्रिक मान्यता। स्वामी दयानन्द ने एकता पर बहुत बल दिया था उस समय भारतवर्ष में कई भाषाएं, अनेकों छोटे – छोटे रजवाड़े, अनेकों साम्प्रदायिक पन्थ विद्यमान थे। स्वामी दयानन्द सभी को एक सूत्र में पिरोना चाहते थे। उनका निश्चित विचार था कि जब राष्ट्र के चिन्तन, विचार,मान्यता,धर्म और राज्य में एकता होती है तभी राष्ट्रवाद बलवान बनता है। स्वामी दयानन्द ने हिन्दी को भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा घोषित किया और सारे देश को जोड़ने वाली भाषा बताया। स्वामी जी ने वेदधर्म को सम्प्रदाय पंथ निरपेक्ष घोषित किया और सभी राज्य की इकाईयां एकत्र होकरएक भारत राष्ट्र बनावें यह प्रेरणा की । सारांश यह है कि स्वामी जी ने एकता पर बड़ा जोर दिया। एक हिन्दी भाषा एवं एक वेदधर्म और एक भारत राष्ट्र, ये तीनों राष्ट्रवाद के लिए आवाश्यक तत्व हैं।

राष्ट्रभाषा का प्रचार :– राष्ट्रीयता के आन्दोलन के काल में स्वामी दयानन्द जी प्रथम व्यक्ति है जिन्होंने यह अनुभव किया कि राष्ट्रीयता की भावनात्मक एकता और राष्ट्रीय उत्थान के लिए सम्पूर्ण देश की एक भाषा होना चाहिये। इसके लिये उन्होंने सभी देशी भाषाओं में हिन्दी को सबसे अधिक उपयुक्त पाया। स्वामी जी जन्म से गुजराती थे किन्तु उन्होंने अपनी मातृभाषा को भी छोड़कर हिन्दी को सारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के रूप में स्वीकार किया। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने अपना युगान्तकारी ग्रन्थ रत्न सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी में लिखा। लाखों व्यक्तियों ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के लिए हिन्दी सिखी। उन्होंने कर्मकाण्ड का ग्रन्थ संस्कार विधि का भावार्थ भी हिन्दी में लिखा। ये सारे कार्य अपने क्षेत्र के सर्वप्रथम कार्य थे। उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए देवनागरी लिपि में हिन्दी भाषा का प्रचार ही नही किया अपितु आन्दोलन भी किया।

हिन्दी के योद्धा सेनानी :– जिस समय स्वामी दयानन्द कार्यक्षेत्र में उतरे, उस समय हिन्दी भाषा की दो धाराएं चल रही थीं। एक राजा लक्ष्मणसिंह की संस्कृतनिष्ठ हिन्दी और दूसरी राज शिवप्रसाद की उर्दू – फारसी भरी हिन्दी । स्वामी जी ने राष्ट्रीयहित और सांस्कृतिक उत्थान की दृष्टि से हिन्दी के महत्व का अनुभव कर लिया था। स्वामी जी ने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी में लिखा , जिसकी लाखों प्रतियां देश में फैल गयी, आर्य विद्वानों और आर्यसमाज ने हिन्दी के समर्थन में जो मोर्चा लिया, उसने उर्दू को उखाड़ ही दिया। स्वामी जी की भाषा कठोर, कटु है, किन्तु क्रान्ति मृदु, मृदुल, मधुर बात से नहीं होती, आपरेशन सुखद नही होते। स्वामी दयानन्द जी को सफलता मिली और बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब कई राज्यों में हिन्दी का खूब प्रचार हुआ और उत्तर प्रदेश और बिहार में तो हिन्दी राज्य की भाषा हो गयी।

हिन्दी के नये आयाम : – स्वामी जी ने सम्भवतः सर्वप्रथम दार्शनिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक प्रश्नों की विवेचना में हिन्दी का प्रभावपूर्ण प्रयोग आरम्भ किया। स्वामी जी से पूर्व हिन्दी गद्य कुछ कथा कहानियों और भक्ति विषयक कुछ गिने – चुने ग्रन्थों तक ही सीमित था। उसे स्वामी जी ने सर्वतोमुखी आयाम दिया। रीतिकाल के नायिका भेद वाले साहित्य की महिमा धट गयी और राष्टप्रेम, देशोद्धार और समाज सुधार की भावनाएं प्रबलता के साथ आगे बढ़ीं। निश्चित रूप से इस सबका श्रेय स्वामी दयानन्द की सुधरवादी भूमिका को जाता है। राष्ट्र कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की सुप्रसिद्ध स्वामी जी के लगभग सभी सुधारों का प्रबल समर्थन उपलब्ध होता है। राष्ट्रकवि दिनकर जी के शब्दों मे 'साकेत' के श्रीराम स्वामी दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाते हैं।

पहले चर्च था अब मन्दिर बना

अमरीका और युरोप के देशों में आज – कल गिरिजाघरों में कोई नहीं जाता। पादरियों की कुदृष्टि भारत सहित एशिया के अन्य देशों पर लगी है। इसलिये यूरोप – अमरीका के लगभग सभी चर्च खाली पड़े रहते हैं। कई गिरिजाघरों को बेचा जा रहा है। ऐसा ही एक चर्च स्वामिनारायण सम्प्रदाय ने पिछले दिनों अमरीका में ओने – पौने दामों में खरीद लियां यह चर्च डेलवारे में था तथा अब इसे भव्य मन्दिर का रूप दे दिया गया है। दिसम्बर माह में इसकी प्राण – प्रतिष्ठा भी हो गई। उक्त चर्च पचास साल पहले ही बना था।

पृष्ठ क्रं. 2 का शेष भाग

तोड़–मरोड़कर विपर्यस्त और गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया है। पर मुझे उसकी कोई चिन्ता नही। जिन मूलभूत सिद्धांतो पर राष्ट्रों के परस्पर संबंध अधिष्ठित रहते हैं। उन्हीं तत्वों के अनुसार में यूरोपीय अथवा अंग्रेज बंधुओं के साथ व्यवहार कर रहा हूं। मैंने जो कुछ भी कहा है, वह सब अपने देशबंधुओं के अधिकारों एवं स्वातंत्रय के प्रति भावना के लिए है और उसके एक–एक अक्षर के समर्थन के लिए मैं तैयार हूं। अंगारों के समान प्रखर, इन शब्दों को पढ़कर न्यायाधीश महोदय के मुख से यदि अकस्मात ये उद्‌गार निकल पड़े कि ''इनके मूल भाषण की अपेक्षा इनका यह सफाई वाला वक्तव्य ही अधिक राजद्रोहात्मक है'' तो क्या आश्चर्य ? पर यह वक्तव्य लिखित होने के कारण सर्व–साधारण तक उसमें सन्निहित भावों को पहुंचाना संभव नहीं था। विदेशी ब्रिटिश सरकार के सच्चे स्वरूप को जनता के सम्मुख प्रस्तुत कर उसके समूलोच्चाटन के लिए उनके अन्तःकरण में प्रखरता निर्माण करने का कोई भी अवसर डाक्टरजी कैसे खो सकते थे ? अतः उन्होंने न्यायालय के अन्दर अपने मुकदमें को देखने के लिए एकत्रित जन समुदाय एवं पेट के लिए अपनी आत्मा को बेचने के लिए उद्धत सरकारी कर्मचारियों के सम्मुख अपना मनोगत भाव रखने के लिए वहीं पर एक प्रभावशाली भाषण दिया। उन्होंने कहा–

'' हिन्दुस्थान भारवासियों का है,तथा हमें उसमें पूर्ण स्वराज चाहिए–यही साधारणतः मेरे भाषणों का विश्व रहता है। परन्तु केवल इतना ही कहने मात्र से काम नहीं चलता। स्वराज्य कैसे मिल सकता है और उसकी प्राप्ति के पश्चात किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए , यह भी लोगों को समझना आवश्यक है। अन्यथा, यथा राजा तथा प्रजा' इस न्याय के अनुसार हमारे लोग भी अंग्रेजों का ही अनुसरण करने लगेंगे। अंग्रेंज, जो स्वयं के राज्य पर संतुष्ट न रहकर दूसरों के देशों पर आक्रमण कर वहीं के निवासियों को गुलाम बनाने में सदैव तत्पर रहते हैं। साथ ही गत महायुद्ध से अपने खड्‌ग को बाहर लाकर रक्त की नदियाँ बहाने में भी वे संकोच नही करते। इसीलिये हमें अपने लोगों को सावधान करना पड़ता है कि 'देखो, तुम अंग्रेजों के इन राक्षसी गुणों का अनुसरण मत करो। केवल शांतिपूर्ण उपाय से ही स्वराज्य प्राप्त करो और स्वराज्य मिलने के पश्चात् दूसरों के देशों पर गिद्ध–दृष्टि न डालते हुए अपने ही देश में संतुष्ट हो। लोगों के अंतःकरण में इस बात को अच्छी प्रकार बिठा देने के लिए कि एक देश के लोगों द्वारा दूसरे देश पर राज्य करना अन्याय है, मैं अपने भाषणों में बार–बार उस तत्व का प्रतिपादन करता हूं। उसी समय प्रचलित राजकरण से संम्बंध आता है। कारण आज अपने इस प्रिय हिंन्दुस्तान पर दुर्देव से विदेशी अंग्रेजी अन्यायपूर्वक शासन कर रहे हैं, यह कम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। सचमुच विश्व के अंदर ऐसा भी कोई कानून है क्या, जो किसी एक देश के लोगों को दूसरे देश पर शासन करने का अधिकार देता हो ? सरकारी वकील महोदय । मेरा आपसे यह सीधा सवाल है, इस प्रश्न का उत्तर क्या आप दे सकेंगे ? क्या यह बात प्रकृति के ही विरूद्ध नहीं है ? और यदि 'किसी एक देश के लोगों को दूसरे देश पर शासन करने का कोई अधिकार नहीं है', यह बात सचमुच ही सही हो तो अंग्रेजो को हिन्दुस्थान की जनता को पैरों तले रौंदकर उस पर शासन का अधिकार किसने दिया ? अंग्रेज तो इस देश के नहीं हैं। तो फिर उनके द्वारा हिन्दू–भूमि के पुत्रों को गुलाम बनाकर, 'इस हिन्दुस्थान के हम क्या न्याय, नीति और धर्म का गला घोटने के ही समान नहीं है ?''

'' इंग्लैण्ड को परतंत्र बनाकर उस पर राज्य करने की हमारी इच्छा नहीं है। परन्तु जिस प्रकार अंग्रेज लोग इंग्लैण्ड पर, जर्मन लोग जर्मनी पर शासन करते हैं, उसी प्रकार हम हिन्दुस्थान के लोग अपने देश पर अपना शासन चाहते हैं। अंग्रेजों की गुलामी का बिल्ला लगाने के लिए हम तैयार नहीं हैं। हमें पूर्ण स्वाधीनता चाहिए और उसे प्राप्त किए बिना हम शांत नही बैठ सकते। अपने देश में स्वतंत्रता की सांस लेने की इच्छा करना, क्या नीति और कानून के विरूद्ध है ? मैं समझता हूं कि कानून के पैरों तले नीति को रौंद डालने के लिए कानून नहीं बनाए जाते। वे बनाए जाते है नीति को संरक्षण प्रदान करने के लिए। उनके इस धीरोदात्त और तर्कसंगत भाषण का वहां पर उपस्थित लोगों पर कैसा प्रभाव हुआ होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं। उपस्थित जन समुदाय के अंग्रेजों का भय और आतंक, सब कुछ भूलकर डाक्टर हेडगेवार जिन्दाबाद के गगनभेदी नारे लगाने का क्या परिणाम हुआ होगा, यह तो कोई भी अनुमान लगा सकता है। न्यायाधीश स्मेली ने अपना निर्णय दिया – आपके भाषण राजद्रोहात्मक हैं। अतः आप इस बात के लिए हजार–हजार रूपए की दो जमानतें और एक हजार रूपए का मुचलका देकर यह वचन दें कि आप एक वर्ष तक भाषण देना बन्द कर देंगे। इस पर नरकेशरी डॉ. हेडगेवार का उत्तर था।

'' आप चाहे जो निर्णय दें। मेरा मन इस बात का साक्षी है कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है। सरकार की दृष्टि में अपराध नहीं किया है। सरकार की दुष्ट नीतियों से उद्‌भूत अग्नि में दमनशाही के अस कारनामें से धूत की आहुति की पड़ेगी। मुझे विश्वास है कि इन परकीय राज्यकर्त्ताओं की शीघ्र अपने पापों के लिए पश्चाताप करने का आस्था है, इसलिए मुझसे मांगी गई जमानत देने से मै साफ इनकार करता हूं।'' पराधीन देश के स्वाभिमानी सपूत को इस 'निर्भीकता के लिए दण्ड' मिलना ही था। उन्हें एक वर्ष का सश्रम कारावास भुगतना पड़ा।

राष्ट्र - ध्वज फहराने पर कानूनी कार्रवाई

आपको याद होगा कि गत 15 अगस्त को केरल की वाममार्गी सरकार ने सरसंघचालक भागवत जी के राष्ट्र – ध्वज फहराने पर रोक लगा दी थी। स्वतंत्रता दिवस पर भागवत जी केरल में थे और पलक्कड़ के कारनेगी अम्मन स्कूल ने उन्हें विद्यालय में राष्ट्र – ध्वज तिरंगा फहराने को आमंत्रित किया था। प्रशासन ने इस पर रोक लगा दी। इस गैर – कानूनी रोक के बाद भी भागवत जी ने उक्त विद्यालय में तिरंगा फहराया। खिसियाई राज्य सरकार ने इसकी खीझ पलक्कड़ के उक्त स्कूल पर निकाली। प्रशासन से स्कूल को कारण बताओं नोटिस भेजा है तथा कानूनी कार्रवाई भी प्रारम्भ कर दी है। लाल – बुझक्कड़ों की सरकार में यही होगा। देशद्रोही तथा हिंसा फैलाने वाले सम्मानित होंगे तथा राष्ट्र –ध्वज फहराने पर मुकदमा चलेगा। अंधेर नगरी, चौपट राजा।

सूचना

कृपया आप ~~अपना ई~~–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com